IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

इक्कीसवीं सदी में साहित्य:विश्लेषण

संजीव कुमार

शिक्षक सरकार। प्राथमिक विद्यालय बेला, तहसील नादौन जिला हमीरपुर (हि.प्र.), भारत

सारांश

'तारसप्तक' की भूमिका हिन्दी - साहित्य में नवीन अवधारणाओं का घोषणा - पत्र कही जा सकती है जिसने परम्परा, आधुनिकता, प्रयोग - प्रगति, काव्य - सत्य, कवि का सामाजिक दायित्व, काव्य - शिल्प, काव्य - भाषा, छन्द आदि की तमाम बहसों को पहली बार उठाकर साहित्यालोचन को मौलिक स्वरूप दिया। पहले 'प्रतीक' फिर 'नया प्रतीक' तथा 'श्वा' का सम्पादन करते हुए उन्होंने अनेक नयी प्रतिभाओं को आगे आने का अवसर दिया। अपने परवर्ती अनेक रचनाकारों पर उनका अमिट प्रभाव देखा जा सकता है। अज्ञेय के साहित्य - चिन्तन की सार्थकता इस विचार में है कि वह समकालीन चिन्ताओं, प्रश्नाकुलताओं और चुनौतियों को ही नहीं, नयी सर्जनात्मक सम्भावनाओं की ओर हमें उन्मुख करता है। भारत और पश्चिम के साहित्य - चिन्तन की परम्पराओं पर गहन चिन्तन करने वाले अज्ञेय में एक उजली आधुनिक भारतीयता का निवास है - एक ऐसी भारतीयता जो मानव को स्वाधीन - चिन्तन और मानव - मुक्ति का सन्देश देती है। हिंदी भारतीय सभ्यता, संस्कृति और समाज की भाषा है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि इक्कीसवीं सदी में कोई भी भाषा ऐसी नहीं है, जिसको चुनौतियां का सामना नहीं करना पड़ रहा । हालांकि किसी भाषा के सामने चुनौतियां कम है और किसी के सामने ज्यादा हैं। आज हम सभी जानते हैं कि हिंदी अपनी पहचान बनाए रखने के लिए बहुत सारी मुश्किलों और चुनौतियों का सामना कर रही है। जिन पर खासतौर से ध्यान देने की जरूरत है। बीसवीं सदी की दहलीज लांघ कर आज हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं। यह मात्र कैलेंडर के पन्ने पलटने की क्रिया नहीं, अपितु हमारी समूची मानसिकता, हमारे भाव विश्व, बुद्धि-जगत एवं हमारे नजरिये में चल रही मंथन प्रक्रिया का आधुनिक युग के परिप्रेक्ष्य में बहुआयामी अवलोकन करने का समय है।

मुख्य बिंदु: संस्कृति , वैश्वीकरण , टेक्नालॉजी , प्रश्नाकुलताओं

प्रस्तावना :

साहित्य सामाजिक परिवर्तन का जीवंत दस्तावेज होता है। इक्कीसवीं सदी में समाज, परिवार और व्यक्ति सभी स्तरों पर जो तीव्रता से बदलाव आया है उसका असर हिन्दी साहित्य पर भी व्यापक रूप से परिलक्षित होता है। नारी शिक्षा के कारण स्त्रियों की मानसिक और बौद्धिक स्थिति में काफी बदलाव हुए हैं। उन्होंने पुरानी मान्यताओं को तोड़कर व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मार्ग अपनाया है। इक्कीसवीं सदी के साहित्य का स्वरूप वह नहीं रह गया जो स्वतंत्रता पूर्व हुआ करता था। नारी के सम्बन्ध भी परिवार के साथ पूर्व जैसे नहीं रहे। वर्तमान परिपेक्ष्य में नारी अपनी सही भूमिका को तलाशती हुई स्वयं को पहचानने और कुंठा से मुक्त करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। उसकी संकल्प की दृढ़ता और आत्म गौरव से परिपूर्ण निष्ठा समाज में उसे लेखनी के माध्यम से प्रतिष्ठित करने में सहायक सिद्ध हो रही है। इक्कीसवीं सदी का नारी लेखन हमें आधुनिकता, वैज्ञानिकता, तार्किकता, समसामयिकता तथा युगीन भाव बोध का परिचय कराता है। आज का नारी लेखन उच्च कोटि का होने के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण भी है। इस सदी की महिलाओं ने अपने लेखन में जीवन और समाज के सभी रंगों को अपनी तूलिका रूपी लेखनी से बड़ी भावात्मकता और कलात्मकता से उकेरा है। इनमें कहीं वृद्ध समस्या है तो कहीं नारी मुक्ति की छटपटाहट, कहीं किसी बड़े परिवार की समस्या है, तो कहीं आधुनिक जीवन का खोखलापन। इक्कीसवीं सदी के नारी लेखन को मैंने क्रमशः उपन्यास, कहानी, काव्य और आत्मकथा जैसी विधाओं के अंतर्गत विभक्त कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

विज्ञान, तंत्र-विज्ञान तथा वैश्वीकरण के युग में धर्म, समाज, जीवन-मूल्य, भाषा, साहित्य एवं कला को परखने के दृष्टिकोण में जो परिवर्तन हो रहे हैं, उसकी गति, प्रभाव एवं परिणामों को झेलकर भी इनका अस्तित्व बनाए रखना अपने आप में चुनौती है। प्रश्नों

की कतार में हमारी भाषा और साहित्य के शाश्वत मूल्यों का प्रश्न एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर खड़ा है। विडम्बना यह है कि इनसे जुड़ी समस्त समस्याओं के बीज हमारी दोहरी मानसिकता में ही दबे हैं।

भाषाओं का सिमटता संसार : टेक्नोलॉजी बनी बोलियों की मृत्यु का कारण

यह तथ्य गंभीर, चिन्तनीय एवं विचारणीय है। औद्योगिक क्रान्ति के साथ-साथ प्रिंटिंग टेक्नालॉजी का आविष्कार हुआ। तकनीक के युग में जो केवल बोलचाल की भाषाएं थीं अर्थात् जिनकी अपनी लिपियां न थीं, वे सारी भाषाएं आज मृतप्राय: बनी हैं। जिन भाषाओं ने प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी के साथ अपनी लिपियों का भी विकास किया वे ही अब प्रगति-पथ पर हैं। हिन्दी भाषा की स्थिति दो रूपों में सामने आ रही हैं। व्यापार, विज्ञापन, पत्रकारिता एवं मनोरंजन के क्षेत्र में हिन्दी एक ओर अपना परचम लहरा रही है, दूसरी ओर विज्ञान, तकनीक, वैद्यकीय एवं सरकारी कामकाज में वह कदम-कदम पर किसी अयाचित की तरह अपना स्थान ढूंढ रही है।

हाशिए पर क्यों जा रही है हिंदी ?

पिछले 70 वर्षों में हिन्दी के प्रति लगाव, आस्था, विश्वास और उसे अपनाने पर गौरवान्वित होने की अनुभूति न जग पाना आज हमारी सबसे बड़ी त्रासदी है। हिन्दी का रोजी-रोटी से प्रत्यक्ष न जुड़ा होना इसका कारण है और समस्या भी। नौकरी, व्यापार और समाज के महत्वपूर्ण मुख्य प्रवेश द्वारों पर अंग्रेजी की टिकिट लेने वालों को ही प्रवेश मिल पाता है। परिणामस्वरूप हिन्दी दिन-प्रतिदिन हाशिए पर चली जा रही है।

हिन्दी के मानक स्वरूप की समस्या

हिन्दी के संबंध में एक महत्वपूर्ण समस्या है उसके मानक स्वरूप को लेकर। वैश्विक स्तर पर स्थापित होने के बावजूद उसके स्वरूप में भ्रम की स्थिति आज भी पूर्ववत बनी है। कैसे भी कुछ भी कह दिया जाए केवल अर्थ सम्प्रेषित हो जाना चाहिए। एक पक्ष भाषा के 'बहता नीर' गुण को मानकर वर्तमान *कोड मिश्रित भाषा* का समर्थन करता है तथा दूसरा पक्ष व्याकरण सम्मत भाषा की अनिवार्यता पर बल देता है। आज सभी क्षेत्रों में स्वच्छंदता या 'मेरी मर्जी' का नारा चल पड़ा है। भाषा इससे अछूती कैसे रह सकती है? अत: शुद्ध-अशुद्ध के मानदंड भी शिथिल हुए हैं यह प्रवृत्ति वांछनीय नहीं कही जा सकती। व्याकरण का तो नाम ही 'शब्दानुशासन' है। किन्तु अनुशासन की अति से बचने की सावधानी भी अपेक्षित है। 'बहते नीर' को भी तटबंधों का अतिक्रमण करने पर नियंत्रित करना पड़ता है।

मानक हिन्दी का स्वरूप

यद्यपि वैश्विक स्तर पर व्यवहृत भाषा का विविध रूपों में विकसित होना अच्छी बात है और बोलचाल की भाषा में इसका स्वागत होना चाहिए। किन्तु लिखित रूप में ऐसी मानक हिन्दी की आवश्यकता है जो सर्वत्र ग्राह्य हो। एक महत्वपूर्ण समस्या है अनुवाद की। हमारे यहां **जर्मन**, **फ्रेंच**, अंग्रेजी, **रूसी**, जापानी आदि भाषाओं में समय-समय पर लिखे जाने वाले नवीनतम शोधों पर आधारित वैज्ञानिक और तकनीकी ग्रंथों को हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद की कोई व्यवस्था नहीं है। परिणामस्वरूप अभियांत्रिकी, आयुर्विज्ञान तकनीक आदि विषयों का अध्ययन करने के लिए पहले अंग्रेजी सीखना मजबूरी बन जाती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ज्ञान, कला व साहित्य में अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए यह एक गंभीर चुनौती है।

कम्प्यूटर क्रांति के साथ ही हिन्दी को लेकर आज एक और चुनौती हमारे सामने है - वह है इन्फरमेशन टेक्नालाजी की। यह बात तब सामने आई जब इस सदी के महान भाषा वैज्ञानिक एवं चिंतक 'यूंआन चॉम्सकी' की रचना 'सन्थेटिक स्टक्चर्स' (1957)

सामने आई। उन्होंने व्याकरण-चिंतन को रिवोल्यूशन मानते हुए भाषा कम्प्यूटर के अनुरूप कैसे हों, इसका स्पष्टीकरण किया। चॉम्सकी के अनुसार कम्प्यूटर में कॉमनसेंस नहीं होता। वह तो गणितीय ढंग से जितना बताया जाएगा उतना ही कर दिखायेगा। हिन्दी भाषा को कम्प्यूटर के अनुकूल गणितीय ढंग में ढालना एक महत्वपूर्ण समस्या है।

अब बात करते हैं साहित्य की।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि साहित्य या तो परिस्थितियों से विद्रोह करता है या परिस्थितियों की शरण में चला जाता है। भूमंडलीकरण के दौर में आज ज्ञान एवं कलात्मक मनोरंजन के अधिकारिक नये साधनों के विकसित हो जाने से अब साहित्य की आवश्यकता ही खतरे में है। प्रश्न यह उठता है कि आज जिन मूल्यों विचारों का बाजार गर्म है, क्या साहित्य उन्हीं का प्रचार-प्रसार करेगा अथवा वह युग को जो देना चाहता है उसी को पढ़ने-समझने एवं उस पर चिंतन करने हेतु बाध्य करेगा। साहित्य के क्षेत्र में एक समस्या है उच्चस्तरीय पाठक की। प्रायः यह सुनने को मिलता है कि नये साहित्य का रसबोध औसत पाठक के लिए सुलभ नहीं है। इसका मुख्य कारण है नये लेखक की अग्रणी संवेदना।

वस्तुतः द्वितीय महायुद्ध एवं स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारतीय समाज में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। वर्तमान साहित्य इन परिवर्तनों को और इनसे आगे की स्थितियों को प्रतिफलित करता है। सामान्य पाठक इन नए परिवर्तनों को स्वीकार करके भी उसे आत्मसात नहीं कर पाते। इस तरह समसामयिक और आधुनिकता के बीच का अंतर गहरा होता जा रहा है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के अध्ययन में एक समस्या यह भी है कि उसकी दिन-प्रतिदिन क्षीण होती रसमयता। एक ओर आज साहित्य अपनी प्रवृत्तियों, संवेदनाओं का अस्तित्व, भावनाओं के ताने-बाने, मानवीय संबंधों के नित्य नूतन तकाजे, कल्पना शक्ति की स्वाभाविक उड़ान, स्वप्न जगत की सच्चाइयां, उसके अंतर्मन तथा दूसरी ओर बाह्य जगत को भौतिक अस्तित्व की गति, प्रगति, सभ्यता के नए-नए आयामों से परिचित कराने वाले विज्ञान के 'खुल जा सिम-सिम' से मोहक मायाजाल के अंतर्विरोधों में पिस रहा है। भावनाओं का स्थान अब बौध्दि उन्मेष ने ले लिया है। साहित्य के अंतरंग में 'रस' बौद्धिक चिंतन में तप कर अब 'रसायन' बन रहे हैं। संभव है भविष्य में कोई प्रेमचंद कम्प्यूटर के शोषण के किसी होरी को मुक्ति दिलाना चाहेगा, कोई मुक्तिबोध मेडिकल साइंस से निर्मित कृत्रिम शिष्यों में से 'ब्रह्मराक्षस का शिष्य' निर्माण करेगा, कोई हजारीप्रसाद द्विवेदी 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' की तर्ज पर टी.वी. चैनलों की आवारा भीड़ क्यों बढ़ती है? की रचना करेगा। एक कठिनाई और हिन्दी साहित्य में किसी भी नये परिवर्तन या आंदोलन को समीक्षकों द्वारा विदेशी प्रभाव घोषित कर दिया जाता है। हम यह मान ही नहीं पाते कि हमारे देश में भी मौलिक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हैं। वस्तुतः नये साहित्य का अध्ययन विदेशी प्रभाव के रूप में न होकर एक अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के रूप में होना चाहिए। क्योंकि विभिन्न देशों की साहित्यिक और राजनीतिक परिस्थितियों में लगभग एक से प्रभाव कार्य कर रहे हैं। अतः मिथ्या अनुकरण की कल्पना भी असंगत होगी।

निष्कर्षतः

वर्तमान साहित्य की उचित समीक्षा एवं मूल्यांकन का अभाव भी साहित्य अध्ययन में व्यवधान उत्पन्न करता है। समर्थ समीक्षक यदि नये साहित्य को गंभीरतापूर्वक लें तो हिन्दी साहित्य का बहुत भला हो सकता है। इधर साहित्य की उपयोगिता संस्कृति के निष्कर्षों पर कसते हुए मांग और पूर्ति के नियमों के अंतर्गत इसके मूल्यांकन की घातक प्रवृत्ति बढ़ी है। भाषा और साहित्य अध्ययन से जुड़े ये वे प्रश्न हैं, जिनसे हमारा रोज सामना होता है और हम जिनसे कतराकर निकल जाना चाहते हैं। किन्तु कहीं ऐसा करते हुए हम अपनी जिम्मेदारी से विमुख तो नहीं हो रहे हैं? इनकी प्रतिध्वनि जहां आपके लिए उत्तर जुटाएगी वहीं इन उत्तरों से नए प्रश्न जन्म लेंगे।

तो क्या प्रश्नों से टकराना ही हमारी नियति है? देखें यह अनगिनत सवालों की शृंखला हमें किस किनारे पहुंचाती हैं। आधुनिक भारतीय अंग्रेजी कविता के नायक के पश्चिम - झुकाव का कारण पूरी तरह से समझने योग्य है कि पहचान करने के लिए इतना दूरस्थ या अस्पष्ट नहीं है। अपने स्वदेशीकरण के सभी हालिया प्रयासों के बावजूद , अंग्रेजी न केवल संरचनात्मक , सौंदर्य और सांस्कृतिक रूप से हिंदी और अन्य भाषा से अलग भाषा हैय यह पराया भी है। और आगे यह केवल विदेशी नहीं है , यह औपनिवेशिक भी है। इन विशेषताओं के साथ , अंग्रेजी में भारत में कविता के माध्यम के रूप में इसकी उपयुक्तता के संबंध में अंतर्निहित सीमाएं हैं। विदेशी भाषा और देशी अनुभव का संकरण केवल देशी के एक कैरिक्युट्रिएशन पर सीमाबद्ध हास्यास्पद सांस्कृतिक विकृतियां उत्पन्न कर सकता है। और (भारतीय अंग्रेजी) कवियों के मामले में , जो मानते हैं कि कविता भाषाई चालाकी के लिए सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण है , की सूक्ष्म बारीकियां। देशी सांस्कृतिक अनुभव (ओं) विदेशी भाषाई ' आदेश ' के अत्याचार के शिकार हैं। ऐसी कविता पश्चिम द्वारा अपनी भाषाई उपलब्धि में प्रमाणित और प्रमाणित होती है।

संदर्भ :

1. हिन्दी शोध डॉट कॉम

2 फॉन्टाना डिक्शनरी ऑफ मॉडर्न थॉट , लंदन : फोंटाना प्रेस , 1977. कैरोल , डेविड , एड , ' थ्योरी ' के राज्य :
3. नई दिल्ली : किताब घर , 1990. बिजल्वान , सीडी इंडियन थ्योरी ऑफ नॉलेज बेस्ड , पर जयंत के NVAVAMANIANRI
4. तुलनात्मक साहित्य के पहलू : वर्तमान दृष्टिकोण , नई दिल्ली : भारतीय प्रकाशक और वितरक , 1989

5. तुलनात्मक भारतीय साहित्य : कुछ परिप्रेक्ष्य , नई दिल्ली : स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा। लिमिटेड 1992

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation